

मनीषा पवार,

प्रमुख सचिव

उत्तराखण्ड, शासन।

सेवा में,

निदेशक,

पंचायतीराज,

उत्तराखण्ड, देहरादून।

पंचायतीराज अनुभाग-1

विषय: पंचायतों के लिए उत्तराखण्ड तीस अपशिष्ट प्रबन्धन नीति, 2017 का प्रख्यापन।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक मा० उच्च न्यायालय, नैनीताल द्वारा रिट पिटीशन संख्या-80/2012 (पी०आई०एल०) श्रीनाथ सेवा मण्डल बनाम राज्य व अन्य में पारित आदेश दिनांक 16.03.2017 के अनुपालन में पंचायतों के लिए उत्तराखण्ड तीस अपशिष्ट प्रबन्धन नीति, 2017 को प्रख्यापित करते हुए अग्रेतर आवश्यक कार्यवाही हेतु संलग्न कर प्रेषित किए जाने का मुझे निदेश हुआ है।

संलग्नक: यथोपरि।

संख्या: 182 (1)/XII(1)/2017-70(08)/2017-रिट तद्विनांकित  
प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनाएँ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :-

1. डिप्टी रजिस्ट्रार (जुडिशियल), मा० उच्च न्यायालय, उत्तराखण्ड, नैनीताल को मा० न्यायालय के उक्त आदेश दिनांक 16.03.2017 के कम में।

2. समस्त अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव/सचिव, उत्तराखण्ड शासन।

3. सचिव, गौपन (मंत्रिपरिषद्) अनुभाग, उत्तराखण्ड शासन के ओ०आइ०एल० संख्या-4/2/XIV/XI/2017-सी०एक्स दिनांक 28 सितम्बर, 2017 के कम में।

4. सचिव, शहरी विकास/वन विभाग, उत्तराखण्ड शासन।

5. सदस्य सचिव, उत्तराखण्ड पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, उत्तराखण्ड, देहरादून।

6. आयुक्त, कृमाऊ/गढ़वाल मण्डल, पौड़ी/नैनीताल।

7. समस्त जिलाधिकारी, उत्तराखण्ड।

8. समस्त मुख्य विकास अधिकारी, उत्तराखण्ड।

9. समस्त अपर मुख्य अधिकारी, जिला पंचायत, उत्तराखण्ड।

10. समस्त जिला पंचायतराज अधिकारी, उत्तराखण्ड।

11. महानिदेशक, सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड, देहरादून।

12. अधिशासी निदेशक, एन०आइ०एल०, सचिवालय परिसर, देहरादून।

13. संयुक्त निदेशक, राजकीय मुद्रणालय, कडकी, जनपद-हरिद्वार।

14. गाई काईल।

प्रमुख सचिव।

(मनीषा पवार)

महोदय,

(हरे चन्द सोमवाल)

अपर सचिव।

୧୫ ୨୦୧୭

ଅପରିଚିତ ପ୍ରଶ୍ନମାନଙ୍କ ଉପରେ

ପ୍ରଶ୍ନମାନଙ୍କ ଉପରେ ଉତ୍ତରମାନଙ୍କ ଉପରେ

# विषय वस्तु

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1	भाग - 1 प्रस्तावना	5-6
2	भाग - 2 पंचायतों के लिए उत्तराखण्ड राज अपशिष्ट प्रबंधन नीति 2.1 नीति के मुख्य उद्देश्य	7-8
3	भाग - 3 (क) निम्नोदर संस्थाएं - ग्राम पंचायतें 3.1 पंचायतें 3.2.1 राज अपशिष्ट की परिभाषा भाग - 3 (ख) उत्तराखण्ड पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड 3.3 जैव चिकित्सा अपशिष्ट 3.3.1 औद्योगिक, घातक अपशिष्ट	9-10
4	भाग - 4 शासकीय सिद्धांत 4.1 समुदाय के स्वस्थ और प्रदूषण मुक्त वातावरण सुनिश्चित करने का सिद्धांत 4.1.1 वायु प्रदूषण 4.1.2 जल प्रदूषण 4.1.3 धाराएं 4.1.4 निम्न एवं विनाश से जनि अपशिष्ट 4.2. पुनर्चक्रण के लिए संसाधनों की पुनः प्राप्ति 4.2. 1.1 कृषिगत तथा धर्माकोल डिस्पोजिबलस 4.2.1.2 ग्रामीण स्वच्छता समिति 4.2.1.3 दक्षता गुणक पद्धति 4.3. अपशिष्ट उत्पन्नकर्ता की निम्नोदरी 4.3.1. अपशिष्ट के प्रकार के अनुसार पात्र में जलना 4.4. उपयोग/पर्यावरण सेवा श्रृंखला 4.5.1 राज अपशिष्ट नियमों के अनुसार मौजूदा प्रणाली का सुधारीकरण 4.5.1.2 घर-घर से संग्रह 4.5.1.3 परिवहन 4.5.1.4 निपटान और उपचार 4.5.2 मूल्य आधारित प्रणाली	11-17

	<p>4.5.3 कम मूल्य आधारित प्रणाली-कबाडियों की भागीदारी</p>	
5	<p><b>भाग-5 अभिनव तकनीकें</b></p> <p>5.1 कचरे से ऊर्जा</p> <p>5.2 अपशिष्ट को कम करने के लिए संयोजीकरण उपकरण -कॉम्पैक्टर्स</p> <p>5.3 जैविक अपशिष्ट से खाद निर्माण</p> <p>5.4 पुनर्विक्रय के बाद अवशेष कूड़े का निस्सारण स्थल</p> <p>5.5 निर्माण एवं विनाश से जनित अपशिष्ट संग्रह केन्द्र</p> <p>5.6 सड़कों के निर्माण में अपशिष्ट का उपयोग</p>	18-19
6	<p><b>भाग - 6 प्रसरण दिशा-निर्देश</b></p>	20-25
	<p>6.1 पुनः उपयोग में आने वाले अपशिष्ट को हटाना</p> <p>6.1.1 अपशिष्ट उत्पन्नकर्ता के उत्तरदायित्व</p> <p>6.1.1.1 गीला/जैविक अपशिष्ट</p> <p>6.1.1.2 सूखा/जैविक अपशिष्ट</p> <p>6.2 अपशिष्ट मिश्रित न करना।</p> <p>6.3 धरों से उपचार स्थल तक परिवहन</p> <p>6.3.1 सिखा और हथ गाड़ियाँ</p> <p>6.3.2 माध्यमिक संग्रह स्थान</p> <p>6.4. लास्टिक की पुनर्प्राप्ति</p> <p>6.4.1. लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन के लिए शैक्षिक रणनीति</p> <p>6.4.2 लास्टिक अपशिष्ट निर्माता की जिम्मेदारी</p> <p>6.4.3 पुनर्विक्रय प्रावधान</p> <p>6.4.4 पाईप निर्माण इकाईयाँ</p> <p>6.4.5. लास्टिक के लिए विनियामक रूपरेखा</p> <p>6.5. कानून की पुनर्प्राप्ति</p> <p>6.6. धातु की पुनर्प्राप्ति</p> <p>6.7. काँच की पुनर्प्राप्ति</p> <p>6.8. जैविक अपशिष्ट से खाद बनाना</p> <p>6.8.1. जैविक अपशिष्ट का स्रोत पर प्रभावकरण</p> <p>6.8.1.1 घर-घर से अपशिष्टों का संग्रहण</p> <p>6.8.2. उपचार प्रक्रिया</p> <p>6.8.2.1. पर्याविक पद्धति से खाद बनाना</p> <p>6.8.2.2 कृषि, बागवानी और वनस्पति में नाइट्रोजन एवं बम्ली खाद का उपयोग</p> <p>6.8.3. कृषि उद्देश्य के लिए खेतों में खाद का उपयोग</p> <p>6.8.4. खाद के उपयोग के लिए स्थानीय विभागों को दिशा-निर्देश</p> <p>6.9. इकाई की स्थापना</p> <p>6.10 बड़े हुए अपशिष्ट को सुरक्षित तरीके से सैनिकी जैडकिल में भंडारण करना</p> <p>6.10.1 पुनर्विक्रय के अयोग्य अपशिष्टों का निपटन</p>	

4

	6.10.2 गैर पुनर्वसनीय अपशिष्ट 6.10.3 धरेलू घातक अपशिष्ट 6.11 ग्रामीण सड़कों/रास्तों एवं नालियों की सफाई कार्यों के लिए नियम	
7	भाग - 7 सामुदायिक जागरूकता एवं जन शिक्षा कार्यक्रम 7.1. जागरूकता शिक्षा सामग्री 7.2. राज्य स्तर पर प्रोत्साहन और निर्देशन 7.3. ग्राम पंचायतों के लिए डाटा बैंक और अन्य कार्यक्रम 7.4. क्षमता निर्माण एवं प्रशिक्षण 7.5. अवशिष्ट प्रवाह	25-27
8	भाग - 8 बायोमैट्रिकल कचरे का प्रबंधन 8.1 अस्पताल, क्लीनिक, रोग विज्ञान केन्द्र एवं नर्सिंग होम से संग्रह	28
9	भाग - 9 संस्थानगत ढांचा 9.1. राज्य स्तर पर कार्यकारिणी समिति 9.2. निर्देशालय स्तर पर सलाहकार समिति 9.3. जिला स्तर पर निगरानी और कार्यान्वयन समिति 9.4. जिला स्तर पर सलाहकार एवं अनुश्रवण समिति 9.4.1. पंचायत स्तर पर भूमिका और उत्तरदायित्व 9.4.2. ग्राम पंचायत स्तर पर मशीनरी/उपकरणों की खरीद 9.5. समूह कार्य के माध्यम से ग्राम पंचायत स्तर पर रोज अपशिष्ट प्रबंधन के किमान्वयन हेतु समिति का प्राकृष	29-34
10	भाग - 10 मुख्य प्रदर्शन संकेतक	35-40
11	भाग - 11 रोज अपशिष्ट प्रबंधन संस्थान स्थापित करने के लिए संगठनात्मक ढांचे	41
12	भाग - 12 उल्लंघन, दण्ड और पुरस्कार	42
	12.1 - उल्लंघन कार्य करने वाली ग्राम पंचायतों को पुरस्कार	43
	खण्डवार ज्ञापन	

उक्त समस्याओं के दृष्टिगत रिट याचिका संख्या-80/12 साईंनाथ सेवा मण्डल बनारस राज्य व अन्य में मा० न्यायालय के आदेश दिनांक 16.03.2017 का अनुपालन करते हुए पंचायतों के लिए उत्तराखण्ड अपशिष्ट प्रबंधन नीति प्रस्तावित किया गया है। यह नीति राष्ट्रीय स्तर पर अपशिष्ट प्रबंधन के संबंध में गठित नीतियों का संज्ञान लेते हुए प्रस्तावित की गई है।

शहरी क्षेत्रों के आस पास की ग्राम पंचायतों का शहरीकरण होने तथा शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या के अत्यधिक वृद्धि के कारण अपशिष्टों का निपटन अनियंत्रित रूप से शहरी क्षेत्रों से लगी ग्राम पंचायतों के आस पास, सड़क के किनारे व पहाड़ी ढलानों तथा नदी नालों में किया जा रहा है, जो राज्य के पर्यावरण के लिए गंभीर चुनौती बनता जा रहा है।

शहरी क्षेत्रों में जल जमाव का मुख्य कारण नालियों में फँके जाने वाला अपशिष्ट है जिसके कारण नालियों से जल का निकास अवरोध हो जाता है और जल मगव की सम्भावना बढ़ जाती है। यद्यपि उत्तराखण्ड राज्य में ग्राम पंचायतें, जो शहरी क्षेत्रों के आसपास हैं वहां के गांवों की सफाई पर अपने बजट का एक बड़ा हिस्सा खर्च करती हैं, लेकिन फिर भी ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में प्रभावी सेवाएं प्रदान करने में असमर्थ हैं। अधिकांश ग्राम पंचायतों को अभी तक इस बात का भी अनुमान नहीं है कि उनके क्षेत्र में ठोस अपशिष्ट कितनी मात्रा में उत्पन्न हो रहा है।

शहरी क्षेत्रों में जल जमाव का मुख्य कारण नालियों में फँके जाने वाला अपशिष्ट है पड़ता है। अपशिष्टों के ढेर में विचरण करते हैं, जिसके कारण जैव-विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव निपटन सही स्थानों तथा सही तरीके से नहीं किया जाता है जो उसके कारण आवागमन पशु मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक हानिकारक है। इसके अतिरिक्त यदि अपशिष्ट का दौरान जिन स्थानों में अपशिष्ट के ढेर होते हैं, वहां घातक बीमारियां उत्पन्न होती हैं जो सफाई, कैडवोरिन और यूटीसीएस जैसी जहरीली गैस उत्पन्न होती है। मानसून के गर्मियों में अपशिष्ट का विघटन ज्यादा तेजी से होता है जिसके कारण हाइड्रोजन

है, जैसे कि-शार्क के माध्यम से पहाड़ी क्षेत्रों से अपशिष्ट को ढलानों में गिरा देना। स्थानों में ठोस अपशिष्ट के प्रबंधन एवं निस्सारण करने के पुराने तौर तरीके अपनाने जाते ग्राम यात्रा मार्ग पर बसे गांवों में ठोस अपशिष्ट भारी मात्रा में उत्पन्न हो रहा है। इन उत्तराखण्ड के धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों पर देखी जा सकती है। इसमें मुख्य रूप से वार 703.69 (100 ग्राम प्रतिव्यक्ति प्रति दिवस) टन ठोस अपशिष्ट उत्पन्न करते हैं। यह समस्या किमी० क्षेत्रफल में फैली है, जिनमें लगभग 7036954 ग्रामीण आबादी प्रतिदिन लगभग पंचायतों में लागू करें। वर्तमान में उत्तराखण्ड राज्य की ग्राम पंचायतें कुल 52,851.08 राज्य सरकारों की मुख्य जिम्मेदारी है कि ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की नीतियों को ग्राम भारत के संविधान के अनुसार, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन राज्य का विषय है जिसमें सभी

- (6) पारिस्थितिकी एवं भौगोलिक परिस्थितियों के अनुकूल उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा।
- (5) ग्राम पंचायतों के अपशिष्ट प्रबंधन के लिए अपशिष्ट की मात्रा एवं प्रकार का अनुमान लगाते हुए ठोस अपशिष्ट के उपचार के लिए तकनीकी का प्रयोग किया जाएगा।
- (4) अपशिष्टों का मूल्य संवर्धन के लिए कार्यनीति तैयार की जाएगी।
- (3) पारिस्थितिकी मूल्यांकन के लिए समुदाय द्वारा जैविक एवं अवैविक कूड़े को अलग-अलग करने एवं कूड़े के प्राथमिक संग्रहण पर उपयोगकर्ता शुल्क (user fee) का प्रावधान किया जाएगा।
- (2) यह नीति राज्य स्तर पर कार्यकारिणी समिति, निदेशालय स्तर पर सलाहकार समिति, जिला स्तर पर निगरानी एवं कार्यान्वयन समिति/सलाहकार एवं अनुश्रवण समिति तथा ग्राम पंचायत स्तर पर गठित होने वाली स्वच्छता समिति के माध्यम से क्रियान्वित की जाएगी।
- (1) ठोस अपशिष्ट प्रबंधन हेतु एक कार्ययोजना ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत और जिला पंचायतों में जनसहभागिता के आधार पर विकसित की जाएगी।

इस नीति उत्तराखण्ड की भौगोलिक परिस्थितियों, विविधताओं एवं जलिलताओं के अत्यंत प्रभावित है जो सामाजिक सहभागिता के फलस्वरूप पर्यावरण व संसाधनों के संरक्षण का संरक्षित कर स्वच्छ वातावरण का निर्माण करेगी।

## 2.1 नीति के मुख्य उद्देश्य

उत्तराखण्ड ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नीति एक मानचित्रकारी है, जो एक निर्धारित समय सीमा के भीतर वांछित परिणामों की पूर्ति की एक योजना है। यह नीति पंचायती राज संस्थाएं और समुदाय के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों पर केंद्रित है, जो राज्य के पंचायतों और ग्रामीणों द्वारा उन्नत ठोस कचरे के वैज्ञानिक प्रबंधन के लिए जल्दी है। इस नीति का लक्ष्य सार्वजनिक स्वास्थ्य, पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना है। एक प्रभावी ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नीति द्वारा विभिन्न गतिविधियों की दृष्टि से सुधार के द्वारा प्राप्त की जा सकती है, जिससे संसाधन और ऊर्जा संरक्षण के लिए सभी स्तरों पर एक व्यावहारिक बदलाव किया जा सकता है। इससे कम अपशिष्ट पैदा करने व उसको अलग-अलग रखने से पुनर्विक्रय को बल मिलेगा। इसके जैविक अपशिष्टों से खाद तैयार की जायेगी व अवैविक अपशिष्ट से नई वस्तुएं बनाकर संसाधनों का संरक्षण किया जायेगा।

## पंचायतों के लिए उत्तराखण्ड ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नीति

- (7) ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की गतिविधियों को संचालित करने हेतु ग्राम पंचायत के प्रधानों, निर्वाचित प्रतिनिधियों, जिला पंचायत अधिकारियों/ग्राम पंचायत विकास अधिकारियों और ग्राम स्वच्छता समिति के सदस्यों को प्रशिक्षित कराया जाएगा।
- (8) उच्च और निम्न मूल्य आधारित अवैधिक, ठोस अपशिष्ट जैसे पेंपर, प्लास्टिक, धातु और कांच आदि के उपयोग हेतु एक कार्यनीति विकसित करना ताकि अपशिष्ट से आस प्राप्त की जा सके।
- (9) समुदाय में अपशिष्ट प्रबंधन के प्रति व्यावहारिक बदलाव व जागरूकता के लिए विभिन्न प्रकार की जानकारीयों से सम्बन्धित साहित्य जैसे-पत्राचार, पोस्टर, बैनर, मीडिया संचार को विकसित कराया जाएगा।
- (10) ठोस अपशिष्ट प्रबंधन में रोजगार के अवसरों को बढ़ावा दिया जाएगा।
- (11) अपशिष्ट संग्रहण दल की दक्षता बढ़ाना। सभी प्रकार के अपशिष्ट का एकीकरण करना जिसमें निर्माण एवं विनाश से उत्पन्न अपशिष्ट, बायोमैडिकल अपशिष्ट और जिला पंचायतों के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों जैसे-लोक निर्माण विभाग, आवास, वन, पर्यटन, विनियामक क्षेत्र, यू.एल.बी. और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड जैसे अपशिष्ट उत्पन्नकर्ता शामिल हैं।
- (12) सरकार द्वारा निर्धारित किये गये नियमों के अनुरूप एक नगरिक घोषणा पत्र तैयार करना जिसमें स्पष्ट रूप से ठोस अपशिष्ट प्रबंधन का लक्ष्य एवं दृष्टिकोण सुनिश्चित होगा।
- (13) मौजूदा अपशिष्ट प्रबंधन और प्रबंधन प्रणाली में सुधार करने के लिए अपशिष्ट धाराओं के प्रबंधन हेतु एक विनियामक ढांचा तैयार किया जाएगा।
- (14) किसी भी प्रकार के अपशिष्ट, विशेषकर प्लास्टिक अपशिष्ट को ना जलाने के लिए ग्राम पंचायतों में जागरूकता बढ़ायी जाएगी।

जैविक :- रसाई घर में जनिअ अपशिष्ट, पेड़ की पलियां, शाखायें आदि।  
अजैविक :- कानान, प्लास्टिक, धातु, काँच आदि।  
निष्क्रिय :- घर की झालन आदि।

### उदाहरणार्थ

संवर्द्धन किया जा सकता।  
करना होगा, जिससे आय का साधन सुनिश्चित किया जा सके, साथ ही पर्यावरण अपशिष्ट प्रबंधन के लिए पर्याप्त धन जुटाने हेतु अधिक से अधिक अपशिष्टों का संग्रहण समान स्तर पर करना होगा। पंचायतों और विशेष रूप से ग्राम पंचायतों को ठोस कचरे का दीर्घकालिक समाधान सुनिश्चित करने के लिए इन सभी मद्दे को एक सांस्कृतिक मुद्दे पर अपशिष्ट उत्पादन, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आधारित होगा है। प्रकृति हर क्षेत्र में भिन्न होती है। जीवन शैली, संसाधन, आय, सामाजिक-आर्थिक और जलित होता है। इसमें विद्यमान अवयव जैविक, अजैविक व निष्क्रिय होते हैं। इनकी ठोस अपशिष्ट से ऐसा अपशिष्ट अभिलेख है जो दैनिक उपयोग के उपरान्त

### 3.2.1 ठोस अपशिष्ट की परिभाषा :

वाले सघनीकरण उपकरण (compactors) का उपयोग किया जाएगा।  
कूड़े को निस्सारण स्थल तक आसानी से ले जाने के लिए कूड़े का आकार कम करने लीद का निस्सारण कम्पैक्टिंग या बायोमैस तकनीक द्वारा किया जाएगा व अजैविक अपशिष्ट प्रबन्धन जिला पंचायतों द्वारा किया जाएगा। विभिन्न अपशिष्ट जैसे घोंडे की है। चारधाम व प्रदेश में स्थित ट्रैक मार्ग पर, जहां वन विभाग की भी मशीनदारी हो वहां निकलने वाले ठोस अपशिष्ट का प्रबंधन व रख-रखाव की जिम्मेदारी ग्राम पंचायतों की पंचायतें पर्वतीय क्षेत्रों में है। इन क्षेत्रों में घरों, संस्थानों, होटलों, व्यापार केन्द्रों आदि से क्षेत्रों एवं 10 पर्वतीय क्षेत्रों में है। 1068 ग्राम पंचायत मैदानी क्षेत्रों में एवं 6890 ग्राम से मैदानी क्षेत्रों में 20, एवं पहाड़ी क्षेत्रों में 75 क्षेत्र पंचायतें, 3 जिला पंचायत मैदानी राज्य में 95 क्षेत्र पंचायत, 13 जिला पंचायत और 7958 ग्राम पंचायत हैं जिनमें

### 3.1 पंचायतें:

जिम्मेदार संस्थाएं

उद्योग कार्यशालाओं द्वारा उत्पन्न होने वाले औद्योगिक और घातक कचरे एवं ई-वेस्ट (E-WASTE) का प्रबंधन प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को अनिवार्य रूप से करना होगा क्योंकि पंचायतें इस तरह के कचरे के प्रबंधन करने के लिए अधिकृत नहीं हैं।

### 3.3.1 औद्योगिक, घातक अपशिष्ट

आवश्यकता है।

बायोमैट्रिकल अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के अनुसार विनियमित करने की करना होगा। इस प्रकार का अपशिष्ट स्वास्थ्य के लिए जोखिम भरा होता है इसे पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (यू.ई.पी.पी.सी.बी) को अनिवार्य रूप से है जिससे ठोस अपशिष्ट दूषित हो जाता है। ऐसे अपशिष्टों का प्रबंधन उत्तराखण्ड बायोमैट्रिकल अपशिष्ट को सामान्यतः ठोस अपशिष्ट के साथ निस्तारित कर दिया जाता अपशिष्ट भी शामिल है जो ट्रैक मार्ग में स्थित स्थानों में बिखरा रहता है। से उत्पादित अपशिष्टों का उल्लेख जैव चिकित्सा अपशिष्ट में होता है। इसमें पशु जाना जाता है। सामान्य रूप से स्वास्थ्य परिसर जैसे अस्पताल, दवाखाने और क्लीनिक जैव चिकित्सा अपशिष्ट को चिकित्सा अपशिष्ट या क्लीनिकल अपशिष्ट के रूप में भी

3.3 जैव चिकित्सा अपशिष्ट :-

उत्तराखण्ड पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड

## शासकीय सिद्धांत

### 4.1 समुदाय के स्वस्थ और प्रदूषण मुक्त वातावरण सुनिश्चित करने का सिद्धांत

स्वास्थ्य और पारिस्थितिकीय संरक्षण के लिए एक सक्रिय सामाजिक भागीदारी को सुनिश्चित किया जायेगा जिसमें लागत को प्रभावी तरीके से एकीकृत होस कचरे के प्रबंधन में उत्कृष्टता प्राप्त करने की अवसरचना और सेवाएं प्रदान करने का प्रावधान होगा। इस सिद्धान्त के तहत सभी हितधारकों के साथ समन्वय करते हुये, क्षेत्र विशेष क्षमताएं, दक्षता और साझादारी को विकसित किया जाएगा।

परिप्रेक्ष	लक्ष्य - I	लक्ष्य - II	लक्ष्य - III
सर्वजनिक स्वास्थ्य और पारिस्थिकी तंत्र का जोखिम कम करना।	मानव के लिए होस अपशिष्ट का जोखिम कम करना।	SWM / PWM से संबंधित नियामक ढांचे का अनुपालन।	ग्राम पंचायत स्तर पर समुदाय के साथ साझादारी में गठित होस अपशिष्ट प्रबंधन समिति को सृष्ट बताना।
मानव के लिए होस अपशिष्ट का जोखिम कम करना।	मानव के लिए होस अपशिष्ट का जोखिम कम करना।	SWM नियम 2016 और जी.ओ. नम्बर 113/07/बारहवीं/90 (11)2006, दिनांक 2 अप्रैल 2007 का अनुपालन करना।	नियमों का अनुपालन करने और विकेंद्रीकृत अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली को ग्रहण करने के लिए ग्राम प्रधानों व सफाई कर्मियों का क्षमता विकास करना।
हवा, पानी, मिट्टी, वनस्पति और जीवों के संदर्भ में पर्यावरण पर एनारिस्टक अपशिष्ट का कम से कम प्रभाव।	एनारिस्टक अपशिष्ट प्रबंधन और हैजलिंग नियम 2016 और UPNBG एक्ट 2013 का अनुपालन सुनिश्चित करना।	औपचारिक प्रणाली के औपचारिक प्रणाली के साथ कबाड़ी की साझादारी के माध्यम से एनारिस्टक कचरे के लिए एक मूल्य श्रृंखला विकसित करना।	वर्ष 2016 में संशोधित बायो मैडिकल अपशिष्ट प्रबंधन नियम का अनुपालन सुनिश्चित करना।
मानव स्वास्थ्य के लिए जोखिम कम करना।	वर्ष 2016 में संशोधित बायो मैडिकल अपशिष्ट प्रबंधन नियम का अनुपालन सुनिश्चित करना।	वर्ष 2016 में संशोधित बायो मैडिकल अपशिष्ट प्रबंधन नियम का अनुपालन सुनिश्चित करना।	वर्ष 2016 में संशोधित बायो मैडिकल अपशिष्ट प्रबंधन नियम का अनुपालन सुनिश्चित करना।

अनुपचारित अपशिष्ट और उसका सुनियोजित तरीके से निपटान न करने से पारिस्थितिकीय व प्राकृतिक सौंदर्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। फौला हुआ अपशिष्ट अक्सर पहाड़ी ढलानों पर एकत्रित हो जाता है जो कि बरसात के जल को अवरोध करता है जिसके कारण भूस्खलन होता है। एकत्रित अपशिष्ट के ढेरों और निपटान स्थलों से बहने वाले पानी से जल प्रदूषण और जल आपूर्ति की गंभीर समस्या होती है। कूड़ा स्थलों के निकट वाले क्षेत्रों में मारी धातुओं की उपस्थिति चिंता का विषय है इसलिए स्थायी अपशिष्ट प्रबंधन की पद्धति अपनाया जाना आवश्यक है।

#### 4.1.2 जल प्रदूषण

जिन स्थानों पर कूड़े का निस्तारण किया जा रहा है वहाँ पर अपशिष्टों के ढेर झाड़ू लगाने के उपरान्त ढक्कन होत है, उसमें आग लगने के कारण वायु प्रदूषण होता है जो घातक बीमारियाँ पैदा करता है, ऐसे स्थान खतरनाक साबित होते हैं। लॉस्टिक और पेपर जैसे मिश्रित कचरे को जलाने से क्लोरीन, कार्बन-डाइ-ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड, सी.एफ.सी, फ्यूरान (Furan) और डाइऑक्सीन (DIOXIN) जैसी विषाक्त गैसों का उत्सर्जन होता है। इस समस्या को ध्यान में रखते हुये कूड़े को जलाने पर प्रतिबन्धित लगाया गया है, जो एस.डब्ल्यू.एम. नियम, 2016 लॉस्टिक अपशिष्ट प्रबंधन और हैंडलिंग नियम, 2016 उत्तराखण्ड लॉस्टिक और अन्य गैर बायोडीग्रेडेबल अपशिष्ट (उपयोग और निपटान) नियम, 2013 में प्रतिबंधित है।

#### 4.1.1 वायु प्रदूषण :-

उद्देश्य (वार)	पर्यावरण पर निर्माण एवं विनाश से जनिता अपशिष्ट का प्रभाव कम करना।	निर्माण एवं विनाश से अपशिष्ट के पुनः उपयोग और पुनर्विक्रय के लिए ऐसे कचरे का सुरक्षित निपटान के लिए प्रयासों की आंतरिक क्षमता का निर्माण करना। पर्यावरणीय सुरक्षा लिए पर्यावरणीय शौच का प्रावधान।
----------------	---	---

4.2.1.1 कैरीबेग तथा शर्माकोल डिस्पोजलस  
उपरोक्त पदार्थों पर उत्तराखण्ड शासन आदेश पत्रांक-88/X-3-17(11)/2001 दिनांक 25.01.2017 द्वारा प्रतिबंध आरोपित किया गया है। ग्राम पंचायतें उपरोक्त आदेश का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित करेंगी।

राष्ट्रीय ऊर्जा का भी संरक्षण करेंगी।  
माध्यम से अंतिम निपटान के लिए भेजा जायेगा। यह रणनीति संसाधनों के संवर्धन के साथ ही पुनर्वसन के प्रचलित अवैधिक (गैर बायोडीग्रेडेबल) अपशिष्ट को पुनर्वसन (रीसाइक्लिंग) के परिवर्तन अथवा कम करना है साथ ही इसके लिए भूमि की आवश्यकता भी कम होती है। पद्धति के द्वारा अपशिष्टों से खाद तैयार की जा सकती है। यह अपशिष्ट संग्रह प्रणाली व पर आधारित है, क्योंकि यह एक विकेंद्रीकृत अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली को बढ़ावा देता है। इस अपशिष्टों का सुनियोजित प्रबंधन समुदाय की साझेदारी और गांव के सभी हिस्सेदारों है।

अलग-अलग करने से खाद की गुणवत्ता में सुधार आता है और पर्यावरण पर दबाव कम होता करने का आधार है जो संसाधन और ऊर्जा संरक्षण के लिए एक आवश्यक कदम है। इसको अपशिष्टों के गुणों एवं प्रकृति के अनुसार छोटाना कूड़ा निस्सारण की रणनीति विकसित

#### 4.2. पुनर्वसन (रिसाइक्लिंग) के लिए संसाधनों की पुनः प्राप्ति

साथ ही नदी के जल स्तर को बढ़ाता है।  
सुचारु प्रवाह करता है। परिणामतः यह आसपास के पादप जगत को भी नुकसान पहुंचाता है, का जीवन काल कम होता है बल्कि उन भू-दलानों का भी क्षरण होता है जो कि वर्षा जल को पहाड़ी ढलानों इतिहास स्थलों पर निपटया जाता है इससे न केवल अपशिष्ट निस्सारित स्थानों ठोस अपशिष्ट का भण्डान माना जाता है और इस तरह के मिश्रित कचरे को आम तौर से नदियाँ, निमोण एवं विनाश से जलित अपशिष्ट (कन्स्ट्रक्शन एवं डिमोलिशन अपशिष्ट) 4.1.4 निमोण एवं विनाश से जलित अपशिष्ट (कन्स्ट्रक्शन एवं डिमोलिशन वेस्ट) :-

जा रहा है, यह नदियों के उठे हुए किनारे के रूप में अनुभव किए जा सकते हैं।  
धाराएँ जो पूरे क्षेत्र में जीवन और जीविका प्रदान करती हैं, को कचरा निपटान का माध्यम माना और एकरिक्त की वजह से भारी मात्रा में भारी और बिखरी हुई रहती है। बारह मासी नदी और रूप से नहीं होती है। घाटियाँ और क्षेत्रीय इलाकों में वर्षा जल निकासी की व्यवस्था अपशिष्ट कचरे के ढेर का सतही प्रभाव तब अनुभव किया जाता है जब जल निकासी अवस्थित

#### 4.1.3. धाराएँ

समिति की होगी।

बुनियादी सुविधाओं जैसे - टेली, रिक्शा / कूड़ादान, डिब्बे आदि की व्यवस्था ग्राम पंचायतों द्वारा की जायेगी, और इन उपकरणों के रख रखाव की जिम्मेदारी ग्रामीण स्वच्छता

पंचायत के खाते में जमा किया जायेगा।

सेवाओं के लिए ग्रामीणों से उपयोग शुल्क (user charge) लिया जायेगा। जिसे ग्राम संग्रह में दक्षता सुनिश्चित करने के लिए एक एक (रोस्टर) बनाया जायेगा। स्वच्छता उसका निस्तारण एक निर्धारित स्थान पर करेगी। ग्रामीण स्वच्छता समितियों द्वारा अपशिष्ट यह उपसमितियां निर्धारित समय पर प्रतिदिन एकत्र किया गया ठोस अपशिष्ट और

स्वच्छता उपसमिति गठित करेगी, जिसका संरक्षक वाई सदस्य होगा।

के लिए अधिकृत होगी, समिति की सहायता के लिए ग्राम पंचायत वाई स्तर पर ग्रामीण ग्राम पंचायत स्तर पर उपरोक्तानुसार गठित स्वास्थ्य एवं कल्याण समिति उक्त कार्यों

साक करने के लिये कर लगा सकती है।

● (17) यदि सफाई ग्राम पंचायत द्वारा की जाती है तो निजी शौचालय और नालियों को

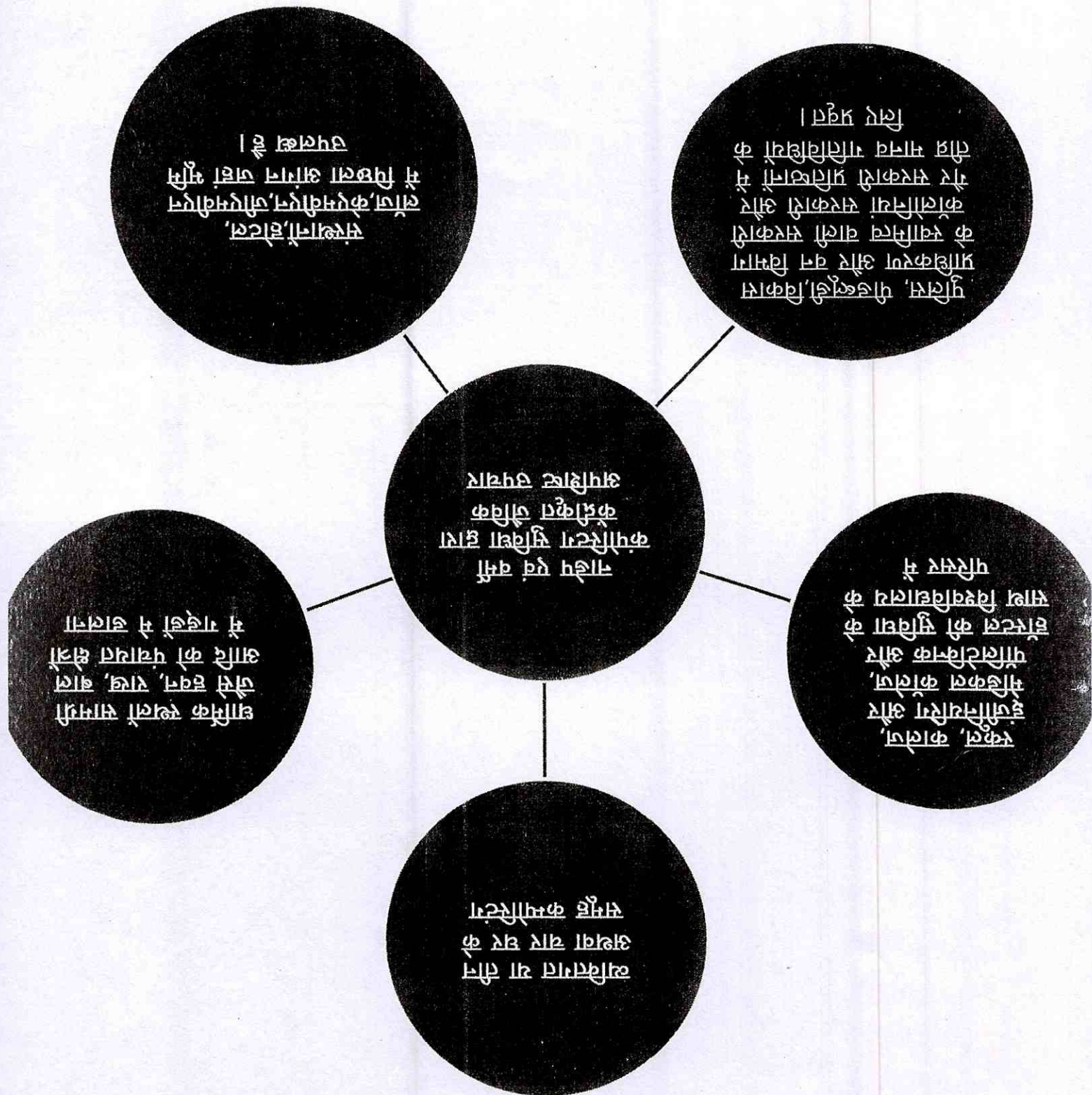
सकती।

● (16) ग्राम पंचायत में कूड़ा-करकट, गंदगी आदि को प्रत्येक घर से एकत्र करने एवं ठोस अपशिष्ट प्रबंधन का अधिकार (निरंतर सड़कों की सफाई, प्रतिदिन गंदगी की सफाई, भूतक पशुओं को हटाया जाना, कूड़ादान, व्यक्तिगत कूड़ा-करकट इकट्ठा करवाना, एकत्रित गंदगी, कूड़ा-करकट डिपों तक पहुँचाना, कूड़ादान तथा पशुओं के शव, संस्थागत कचरा, व्यापारिक कचरा, धूल, धूल, घरेलू कचरे के अस्थायी एकत्रीकरण हेतु स्थान एवं पात्र धारक के सम्बंध में व्यवस्था) ग्राम पंचायत अपने क्षैजान्गत कर

अनुपालन सुनिश्चित किया जाना है। उपधारा 16, 17 में वर्णित प्रावधान निम्नवत है।

उत्तराखण्ड पंचायतीराज अधिनियम की धारा 46 के प्रस्तर 16, 17 में उल्लिखित प्रावधानों का अनुसूची के क्रमांक 23, 24, 25, 26, 27 से सम्बन्धित कार्यों का सम्पादन करने के लिए अधिकृत है। कल्याण समिति के गठन का प्रावधान किया गया है। समिति भारत के संविधान के 11वीं उत्तराखण्ड पंचायतीराज अधिनियम की धारा 145 में ग्राम पंचायत के अन्तर्गत स्वास्थ्य एवं धारा-तेईस के प्रस्तर (क) में ग्रामीण स्वच्छता के प्रोत्तति सम्बन्धी कृत्य शामिल है। पंचायतीराज अधिनियम 2016 की धारा 23 जिसमें ग्राम पंचायतों के कृत्यों का वर्णन है, जिसमें संविधान की 11 वीं अनुसूची में पंचायतों की विधि बनाने की शक्तियां निहित हैं। उत्तराखण्ड

4.2.1 ग्रामीण स्वच्छता समिति :-



गीला अपशिष्ट प्रत्येक दिन घर-घर से संग्रह किया जाएगा और सूखे अपशिष्ट को सप्ताह में दो बार एकत्र किया जाएगा।

#### 4.5.1.2. घर-घर से संग्रह:

उपभोक्ता ठोस अपशिष्ट को दो व्यापक श्रेणियों में विभाजित करेंगे, गीले जैविक अपशिष्ट के प्रमुख घटक रसोई के अपशिष्ट होते हैं जबकि सूखा /अजैविक कानून, प्लास्टिक, धातु और गिलास होते हैं। ग्राम पंचायत के अपशिष्ट के पुनर्चक्रण के लिए कूड़ादान निर्धारित रंग कोड अपशिष्ट प्रबंधन के नियम 2016 के अनुसार होंगे।

#### 4.5.1.1 अपशिष्ट का स्रोत पर पुनर्चक्रण

#### 4.5.1 ठोस अपशिष्ट नियमों के अनुसार सौजदा प्रणाली का सुधारीकरण

उनके स्वामित्व में लाना होगा।  
सामितियाँ और अपशिष्ट संग्रह दल की बेहतर सेवा के लिए ठोस अपशिष्ट प्रबंधन कार्यक्रम को जो संसाधनों के रणनीति उपयोग और इसके निपटान के लिए आवश्यक है। गाँव की स्वच्छता यह साझेदारी आने वाले समय में एक बहुआयामी और बहुविधधारक साझेदारी विकसित करेंगे। यह योगदान समुदाय के स्वामित्व और अपशिष्ट प्रबंधन के बारे में जागरूकता विकसित करेंगे। और निपटान की प्रक्रिया में लाने वाली लागत को समुदाय से लिया जाने का प्रावधान होगा। उपयोग /प्यावरण (ईको-सिस्टम) सेवा श्रृंखला के भुगतान के माध्यम से अपशिष्ट संग्रह

#### 4.4 उपयोग श्रृंखला/प्यावरण सेवा श्रृंखला

रखेंगे।  
प्रत्येक घर, व्यापारी संस्थाएँ, होटल, रेस्टोरेंट आश्रम, पूजा के स्थानों में अलग अलग तरीके के अपशिष्ट को पुनर्चक्रण करने के लिए दो अलग-अलग जैविक एवं अजैविक कूड़ादान

#### 4.3.1. अपशिष्ट के प्रकार के अनुसार पात्र में डालना

के लिए अपशिष्ट को स्रोत से ही अलग करने की जिम्मेदारी उत्पादनकर्ता की होगी।  
अपशिष्टों का निपटारा खुले भूमि भरण (डम्पिंग) के माध्यम से किया जाता है। संसाधन संरक्षण होटल और रेस्टोरेंट आदि अपने कूड़े को मिश्रित रूप से निस्तारित करते हैं। इस तरह के का सबसे बड़ा हिस्सा 81 प्रतिशत है, धरत, संस्नात (इस्टीट्यूशन) और वाणिज्यिक, बाजार, है जैसे-धरत, वाणिज्यिक और संस्नात अपशिष्ट। धरत अपशिष्ट ग्राम पंचायत के अपशिष्ट ठोस अपशिष्ट को स्रोत के अनुसार तीन प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता

#### 4.3. अपशिष्ट उत्पन्नकर्ता की जिम्मेदारी

कथित अपशिष्ट को हर कोई अपशिष्ट नहीं मानता है। कूड़ा निस्सारण स्थल पर कबाड़ियाँ द्वारा छोटे पैमाने पर दूसरे लोगों से अपशिष्ट से मूल्य प्राप्त करते हैं, संस्थानगत औपचारिक क्षेत्र के माध्यम से इन अनौपचारिक क्षेत्र की साझेदारी, संसाधन वसूली और ऊर्जा संरक्षण के लिए अवयव परावर्तन (मटीरियल लाइवरसन) कार्यक्रम को पूर्ण करेगा।

#### 4.5.3 कम मूल्य आधारित प्रणाली— कबाड़ियों की भागीदारी

मूल्य आधारित पुनरावर्तनीय अपशिष्ट जैसे अखबार धातु, उच्च गुणवत्ता का प्लास्टिक और कांच की बोतलें आदि जो कबाड़ियों द्वारा घर-घर जाकर लाया जाता है उसको घर में ही पुंथक किया जाता है। लगभग 15-20 प्रतिशत मूल्य आधारित अपशिष्ट का निपटन कबाड़ियों द्वारा किया जाता है।

#### 4.5.2 मूल्य आधारित प्रणाली

पर्वतीय और मैदानी क्षेत्र में स्थित पंचायतों में जैविक अपशिष्ट से वर्मी एवं नाइप तकनीक द्वारा खाद बनायी जायेगी। शेष अपशिष्ट पुंथक करके अंतिम उपयोग अथवा निपटन के लिए भेजा जाएगा।

#### 4.5.1.4 निपटन और उपचार :

तरल व सड़े अपशिष्ट की समस्याओं से बचने के लिए उसका परिवहन बन्द डिब्बों में किया जायेगा।

#### 4.5.1.3 परिवहन :

टोस अपशिष्ट प्रबंधन और हैजलिंग नियम 2016 की अनुसूची-1 के अनुपालन में वैज्ञानिक रूप से तैयार किए गए बैडकिल में कॉम्पैक्शन और कम्पैक्टिंग के बड़े हुए अवशेषों को समाप्त करने की आवश्यकता है। अवयव परावर्तन (मेटिरियल डाइवर्जन) रणनीति अवशेषों की मात्रा को कम कर देती है यह अपशिष्ट कचरे को समाप्त करने का उपयुक्त तरीका है। पहाड़ी क्षेत्रों में बैडकिल का निर्माण टोस अपशिष्ट प्रबंधन एवं हैजलिंग नियम 2016 के अन्तर्गत प्रतिबन्धित है। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि निर्माण एवं विनाश से जनित अपशिष्ट

#### 5.4 पुनर्वक्का के बाद अवशेष कूड़े का निस्तारण स्थल (बैडकिल साइट)

जीविक कचरा एक बहुमूल्य संसाधन है और इसे खाद बनाने की तकनीक नाइप एवं वर्मी कम्पोस्ट के माध्यम से उपयोग में लाया जा सकता है, इसके अलावा यह प्रकिया कार्बन को सोखने में भी मदद करती है और मीथेन जैसी ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन को रोकता है।

#### 5.3 जीविक अपशिष्ट से खाद निर्माण

अजीविक (गैर बायोडिग्रेडेबल) अपशिष्ट विशेष रूप से प्लास्टिक और कागज को सामान्य प्रकिया में ग्राम पंचायत की अपशिष्ट धाराओं में डाल दिया जाता है। इन सामग्रियों की उच्च पुनर्वक्काणीय क्षमता होती है और इस तरह उन्हें लम्बी दूरी पर परिवहन बनाने के लिए सघनीकरण (कॉम्पैक्ट) किए जाने की आवश्यकता होती है, जिससे सघनीकरण के बाद कचरे के मूल्य में वृद्धि हो जाती है। धातु और काँच मूल्यवर्धी सामग्री है अपशिष्ट से ग्राम पंचायत के लिये राजस्व अर्जित कर सकती है।

#### 5.2 अपशिष्ट के आकार को कम करने का सघनीकरण उपकरण (कॉम्पैक्टर)

कचरे से ऊर्जा प्रौद्योगिकी को कूड़े की मात्रा के अनुसार किया जा सकता है। राष्ट्रीय मास्टर प्लान देश के लिए उपयुक्त ऊर्जा (थर्मल) प्रकिया आधारित सघनीकरण और पायरोलिसिस तकनीक की सिकाइ करता है। बायो मीथेनीकरण वहाँ ऊर्जा उत्पन्न करने में सफल रहा है जहाँ कचरा समरूप हो, जैसे बायोमास, गाय का गोबर, भूगर्भी पालन, बूँदछाना का अपशिष्ट इत्यादि।

#### 5.1 कचरे से ऊर्जा

### अभिनव तकनीकें

प्रादेशीय अपशिष्ट जिसकी गुणवत्ता 1500 किलो कैलरी प्रति किलोग्राम होगी, उसके पुनर्विक्रित कर लोक निर्माण विभाग व सड़क निर्माण में जुड़ी अन्य एजेंसियों द्वारा सड़क निर्माण में उपयोग करने का प्रावधान है।

#### 5.6 सड़कों के निर्माण में प्लास्टिक का उपयोग

निर्माण एवं विनाश से जनित अपशिष्ट (कन्स्ट्रक्शन और डिमोलिशन): अपशिष्ट कचरे में निर्माण व विनाश सामग्री, रास्ता कटान मसूखलन और सड़क के किनारों से उत्पन्न सभी अपशिष्ट शामिल होते हैं। इस तरह के कचरे के निपटान के लिए विशिष्ट दिशा निर्देशों के अनुसार पुनर्उपयोग में लाने का प्रावधान है।

#### 5.5 निर्माण एवं विनाश से जनित अपशिष्ट (कन्स्ट्रक्शन और डिमोलिशन) संग्रह केन्द्र

(कन्स्ट्रक्शन और डिमोलिशन) को लैंडफिल में ना डाला जाए क्योंकि यह उनके जीवनकाल को छोटा कर देता है।

अलग अलग कचरे को विभिन्न रूप से निर्मित किये गये वाहनों में ले जाने की आवश्यकता है यहाँ पर यह भी सुनिश्चित करना होगा कि अपशिष्ट मिश्रित न हो। गीला कचरा दैनिक आधार पर एकत्रित होगा जबकि सूखा कचरा सप्ताह में एक या दो बार एकत्रित किया जाएगा।

### 6.3 धरती से उपचार स्थल तक परिवहन

कचरा संग्रहकर्ता को यह सुनिश्चित करना है कि कचरा मिश्रित नहीं किया जायेगा और क्षेत्र विभिन्न की आवश्यकताओं के अनुसार अपशिष्ट संग्रह के लिए एक समय सारिणी निर्धारित कर अपशिष्ट का निस्तारण किया जायेगा।

### 6.2 अपशिष्ट को मिश्रित न करना

सूखा कचरा जिसमें कानूज, प्लास्टिक (सभी प्रकार), दवाओं के खाली पैपर, सिरेप की बोतलें, धातु इत्यादि को अलग से डिब्बों में रखा जायेगा।

#### 6.1.1.2 सूखा/जैविक अपशिष्ट

रसाई अपशिष्ट जिसमें छिलके और बचा हुआ भोजन शामिल है उन्हें कम्पोस्टिंग के माध्यम से निपटान के लिए अलग से रखा जायेगा।

#### 6.1.1.1 गीला / जैविक अपशिष्ट

कचरा उत्पन्नकर्ता कचरे को सील पर ही अलग करेगा।

#### 6.1.1 अपशिष्ट उत्पन्नकर्ता के उत्तरदायित्व

कचरे के वैज्ञानिक उपचार के लिए एक संसाधन के रूप में ठोस कचरे के पुनर्नवीनीकरण सामग्रियों को पुनः प्राप्त करने की आवश्यकता है।

#### 6.1 पुनः उपयोग में आने वाले अपशिष्ट को हटाना

प्रसंस्करण दिशानिर्देश

प्रबन्धन किया जा सकता है लेकिन पुनर्वकण नहीं किया जा सकता है। सभी सात (7) किया जायेगा। पैकिंग और अन्य उपयोग किये जाने वाले थर्मोलास्टिक का एक छत के नीचे लास्टिक का पुनर्वकण केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के दिशानिर्देशों के अनुसार

### 6.4.3. पुनर्वकण प्रावधान:

है साथ ही उद्योग व कंपनियों अपने पैकिंग के प्रति जबाबदेह भी होगी। लास्टिक प्रदूषक उत्पादक एवं प्रदूषण फैलाने वाली कंपनियों से सेवा शुल्क लेने का प्रावधान लास्टिक अपशिष्ट प्रबन्धन हैडलिंग नियम 2016 के "पौल्यूटर पैस सिद्धान्त" के आधार पर

### 6.4.2 लास्टिक निर्माता की जिम्मेदारी

जायेगी। इसके अलावा समुदाय के लिए उपयोगी एवं जनकाशीप्रद पाठ्य सामग्री के रूप में तैयार की लास्टिक अपशिष्ट के प्रबंधन के लिए, स्कूलों, कॉलेजों के पाठ्यक्रम में शामिल किया जायेगा।

### 6.4.1. लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन के लिए शैक्षिक रणनीति:

के लिए बना जायेगा। अपशिष्ट प्रबंधन हैडलिंग नियम-2016 की अनुसूची) व सघनीकरण (कॉम्पैक्ट) करके पुनर्वकण धातु। कई प्रकार के लास्टिक होने से इन्हें सात भागों में अलग किया जायेगा (लास्टिक सुखे अपशिष्ट को चार घटकों में विभाजित किया जायेगा जैसे- कागज, लास्टिक, काँच और

### 6.4. लास्टिक की पुनर्प्राप्ति

पर उपलब्ध करवाना। उपभोक्ता अपशिष्ट के अंतिम निपटान के लिए पर्याप्त डिब्बे/संग्रहण (कंटेनरिंग) केन्द्रों

### 6.3.2. माध्यमिक संग्रह स्थान

क्षेत्रों से जुड़ी पंचायतों में रिकवरी द्वारा जायेगा। परिवहन वाहनों जैसे पहड़ी क्षेत्रों में कंघों पर उठाए जाने वाले डिब्बे, हथ गाड़ी और मैदानी कचरे के रिसाव और बिखराव को रोकने के लिए घर घर से संग्रहित कचरा विशिष्ट

### 6.3.1 रिकवरी और हथ गाड़ियाँ

जैविक अपशिष्ट में लगभग 60 प्रतिशत जैविक पदार्थ होते हैं जिनमें 70 प्रतिशत नमी होती है। नाइट्रोजन, कार्बोहाइड्रेट्स, और फॉस्फोरस (एन.पी.के) जैसे आवश्यक तत्व, जो मिट्टी की उर्वरक शक्ति को बढ़ाते हैं उन्हें कम्पोस्टिंग के माध्यम से पुनर्चक्रित किया जाएगा।

#### 6.8. जैविक अपशिष्ट से खाद बनाना:

पुनर्चक्रित किया जाएगा।  
कॉच के रूप में बोलाले, टूटे गिलास काँकरी, बल्ल अपशिष्ट को पृथक कर के पुनर्प्राप्त और

#### 6.7. कॉच की पुनर्प्राप्ति :

टिन और कच्ची सामग्री युक्त धातु को पुनर्चक्रण के माध्यम से अंतिम उपयोग और निपटान के लिए सघनीकरण कर के पुनर्चक्रित किया जाएगा।

#### 6.6. धातु की पुनर्प्राप्ति

पुनर्चक्रण इकाइयों में भेजा जाएगा।  
कामान एक बहुमूल्य संसाधन है इसे मिल बोर्ड, डिब्बों, रिफाई पेपर, और स्कैप में वर्गीकृत किया जा सकता है। इसको पृथक करके सघनीकरण उपकरण (Compactor) द्वारा सघन करके

#### 6.5. कामान की पुनर्प्राप्ति

जुमाना व चालान करने का प्रावधान है।  
होगा। इस अधिनियम के अनुसार नियम का अनुपालन न होने की स्थिति में ग्राम पंचायत द्वारा उल्लंघनकारी कार्रवाई की जाएगी एवं अन्य अवैधिक अपशिष्ट अधिनियम-2013 के अनुसार प्रबंधन एवं हैजलिंग नियम 2016 और अन्य अवैधिक अपशिष्ट का उपयोग व निपटान ग्राम पंचायत यह सुनिश्चित करेगी कि कार्रवाई अपशिष्ट का प्रबंधन कार्रवाई अपशिष्ट

#### 6.4.5. कार्रवाई के लिए विनियामक रूपरेखा:

मूल्यांकन होता है। इस अपशिष्ट को माध्यमिक कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाएगा।  
को बनाने में उपयोग किया जाएगा। एच.डी.पी. या पीपी से बने हुए बैलों में बहुत कम फ्लेम कार्रवाई को एक्सट्रूजन (Extrusion) व मोल्डिंग के द्वारा पाइप जैसे टिकाक वस्तुओं

#### 6.4.4 पाइप निर्माण इकाइयां:

अंतिम उपयोग निपटान के लिए जोड़ा जाएगा।  
पीलिमरस का जीवन चक्र अलग होता है। इसे संभावित अपशिष्ट डीलरों और इकाइयों को

ग्राम पंचायत ठोस अपशिष्ट से बनी हुई खाद का प्रयोग खेतों में कृषि के लिए करेंगे।

### 6.8.3. कृषि उद्देश्य के लिए खेतों में खाद का उपयोग:-

ग्राम पंचायत विशेष प्रावधान करेंगी।

नाडेप एवं वर्मी खाद द्वारा कृषि, बागवानी और वनस्पतिक अपशिष्ट का निपटान करने के लिए

### 6.8.2.2 कृषि, बागवानी और वनस्पति में नाडेप एवं वर्मी खाद का उपयोग :-

जैविक अपशिष्ट को नाडेप या वर्मी कम्पोस्ट विधि से खाद बनायी जायेगी। कम्पोस्टिंग की प्रक्रिया को उत्प्रेरित करने के लिए उत्प्रेरक के रूप में प्रभावी सूक्ष्म जीवी समाधान, गायों का गोबर और सीरे का उपयोग किया जाएगा।

### 6.8.2.1. एर्यविक पद्धति से खाद बनाना

उपचारित करेंगी।  
पर्वतीय और मैदानी क्षेत्रों में स्थित ग्राम पंचायतें विकेन्द्रीकृत कम्पोस्टिंग व्यवस्था सुनिश्चित करेंगी। ग्राम एवं वार्डों में उपलब्ध भूमि को जैविक अपशिष्ट को बाजलीवी कम्पोस्टिकरण द्वारा

### 6.8.2. उपचार प्रक्रिया:

मण्डारण किया जा सकेगा।  
परिवारों को मूल्य पर उपलब्ध करवाये जायेंगे। इससे अपशिष्टों का स्रोत पर पृथक्कीकरण एवं कृषि के एकत्रीकरण के लिए न्यूनतम मूल्य पर एल.डी.पी.ई के प्लास्टिक बैग ग्राम पंचायत द्वारा सभी क्षेत्रों के इस अपशिष्ट को कम्पोस्टिंग साइट पर उपचार के लिए ले जाया जाएगा। सूखे कचरे मैदानी क्षेत्रों में वाहन/रिक्शा में स्थित कूड़ादानों में एकत्रित किया जायेगा। पहाड़ी एवं मैदानी पहाड़ी क्षेत्रों में घरों से उत्पन्न जैविक अपशिष्ट को उठा कर कूड़ादान में एकत्र किया जाएगा।

### 6.8.1.1 घर-घर से अपशिष्टों का संग्रहण:

गुणवत्ता व प्रदूषक रहित खाद तैयार की जा सकेगी।  
रसोई घरों में उत्पन्न जैव विघटनशील अपशिष्ट को अलग रखा जायेगा जिससे अच्छी

### 6.8.1. जैविक अपशिष्ट का स्रोत पर पृथक्करण:

6.10.3 धरल घातक अपशिष्ट:- जैसे- एयरोसोल के डिब्बे, बैटरी, स्प्रिंकलर, स्प्रिंकलर के डिब्बे आदि, सामान्य विकिरण अपशिष्ट जैसे- इंसुलिन लिथियम, पेंट्स, स्नेहक, हिन्टर के डिब्बे आदि, सामान्य विकिरण अपशिष्ट जैसे- इंसुलिन

जायेगा।

6.10.2 गैर पुनर्विक्रय अपशिष्ट :- 1500 कि० कैंलोरी/कि० ग्रा या अधिक कैंलोरी/कि० ग्रा मान रखने वाले गैर पुनर्विक्रय अपशिष्टों को ईंधन की तरह ऊर्जा उत्पन्न करने वाले संयंत्रों में भेजा जाएगा। इन अपशिष्टों का उपयोग लोक निर्माण विभाग द्वारा सड़क बनाने में उपयोग किया

मशीकरण (INCINERATOR) पत्र द्वारा उपचारित किया जाएगा। साथ निस्सारित किया जाएगा। इसको पृथक करके भूमि में बड़े गड्ढों में दबाया जाएगा या टैम्पन, कंडोम, इनकंटीनस वीट और कोई अन्य समकक्ष अपशिष्ट को अवैधिक अपशिष्ट के तौर पर अपशिष्ट प्रबंधन एवं हैजलिग नियम 2016 के अनुपालन में हाइड्रस, टॉलिए या नेपिकन,

#### 6.10.1 पुनर्विक्रय के अयोग्य अपशिष्टों का निपटारा:-

जायेगा।

वृक्षारोपण के माध्यम से इन सेनिटरी लैंडफिल स्थलों को हरित पट्टी द्वारा स्थापित दिया जाएगा। सेनिटरी लैंडफिल की संर्चना पर एम.एस.डब्ल्यू नियम 2016 की अनुसूची 3 के अनुसार अधिकारी द्वारा अपशिष्ट प्रसंस्करण और सेनिटरी लैंडफिल के लिए भूमि का चयन किया जाएगा। सेनिटरी लैंडफिल में निस्सारित करेगी। जिन्हा अधिकारी एवं जिन्हा अधिकारी द्वारा नामित समस्त अपशिष्टों के उपचार के उपरान्त बचे हुये अपशिष्ट को ग्राम पंचायत सैदानी क्षेत्रों में स्थित सेनिटरी लैंडफिल में निस्सारित करेगी। जिन्हा अधिकारी एवं जिन्हा अधिकारी द्वारा नामित

#### 6.10 बचे हुए अपशिष्ट का सेनिटरी लैंडफिल में संभारण करना:-

ईट बनाने हेतु पुनर्विक्रय इकाइयों स्थापित की जायेगी। अपशिष्ट के संग्रहण के लिए एक केन्द्रीकृत व्यवस्था की जायेगी। इस अवशिष्ट से पेरस और अपशिष्ट के संग्रहण एवं निराश से जलित अपशिष्ट (कम्पस्टेशन एण्ड डिमोलिशन) (कम्पस्टेशन एण्ड डिमोलिशन) को सड़को और फुटपाथों के निर्माण में उपयोग किया जाएगा। इस अपशिष्ट का प्रबंधन नियमों के अनुकूल हो सके। निर्माण एवं निराश से जलित अपशिष्ट शीक, मध्यम और अल्प अपशिष्ट उत्पादकों के लिए एक दिशा निर्देश जारी करना होगा जिससे

#### 6.9. ईकाई की स्थापना

खाद को वन, उद्यान और जैविक बोर्ड को भी बेचा जा सकता है।

#### 6.8.4. खाद के उपयोग के लिए स्थानीय विभागों को दिशा-निर्देश:-

सिख, साइंटिफिक ड्रास, एक्सपर्ट दवाएं आदि को पीले रंग के बैग में पैक किया जाएगा और खतरनाक अपशिष्ट के साथ बायोमैडिकल वेस्ट के साथ निस्तारित किया जाएगा।

#### 6.11 ग्रामीण सड़कों / रास्तों एवं नालियों की सफाई कार्यों के लिए नियम:-

भारत सरकार के सी०एच०ई०पी०आर० मैनुअल के आधार पर ग्राम पंचायतों में सड़कों, रास्तों एवं नालियों की सफाई के लिए सड़कों को निम्न आधार पर वर्गीकृत किया जाएगा।

उच्च जन घनत्व क्षेत्र = 350 मीटर

मध्यम जन घनत्व क्षेत्र = 600 मीटर

कम जन घनत्व क्षेत्र = 750 मीटर

## 7.5 अपशिष्ट प्रवाह

ग्राम पंचायतों को ठोस अपशिष्ट के समुचित प्रबन्धन के लिए समय-समय पर क्षमता निर्माण व प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। नियमों के विभिन्न प्रावधानों के अनुपालन में प्रशिक्षण दिया जायेगा।

## 7.4 क्षमता निर्माण एवं प्रशिक्षण :-

कूड़ा प्रबन्धन के लिए अवस्थापना सम्बन्धित सुविधायें जुटाई जायेंगी।  
समय-समय पर मौलिक स्थापना के माध्यम से ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन कार्यक्रम के अनुश्रवण एवं निगरानी के लिए निर्देशालय स्तर पर एक डेटा बैंक बनाया जाएगा। ग्राम पंचायत स्तर पर विस्तृत परियोजना विवरण तैयार करने तथा ग्राम पंचायतों को राज्य एवं केन्द्र से प्राप्त होने वाली धनराशि/स्थलीय विभागों की योजनाओं से प्राप्त होने वाली धनराशि से

## 7.3 ग्राम पंचायतों के लिए डेटा बैंक और अन्य कार्यक्रम:-

समय-समय पर मौलिक स्थापना के माध्यम से ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन कार्यक्रम के अनुश्रवण एवं निगरानी के लिए निर्देशालय स्तर पर एक डेटा बैंक बनाया जाएगा। ग्राम पंचायत स्तर पर विस्तृत परियोजना विवरण तैयार करने तथा ग्राम पंचायतों को राज्य एवं केन्द्र से प्राप्त होने वाली धनराशि/स्थलीय विभागों की योजनाओं से प्राप्त होने वाली धनराशि से  
उत्पादक होने वाले गैर जलमय ग्राम पंचायतों को दृष्टिगत किया जाएगा जिसके लिए ग्राम प्रधान वृक करने वाले गैर जलमय ग्राम पंचायतों को दृष्टिगत किया जाएगा जिसके लिए ग्राम प्रधान 2016 और समय स्वच्छता अभियान से भिन्न हो। नीति का पालन न करने वाले और नीति में संशोधन एक संक्षेप प्राधिकारी द्वारा किया जाएगा, जो अच्छी तरह से एस.डब्ल्यू.एम नियम स्वच्छता के माध्यम से प्रमुख संकेतकों के आधार पर पुरस्कार दिया जाएगा। उनका दिनांक 02/04/2007 को लागू करने में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले ग्राम पंचायतों को ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन एवं हैजलिंग नियम 2016 और जी.ओ.113/07/XII/30(11)2006

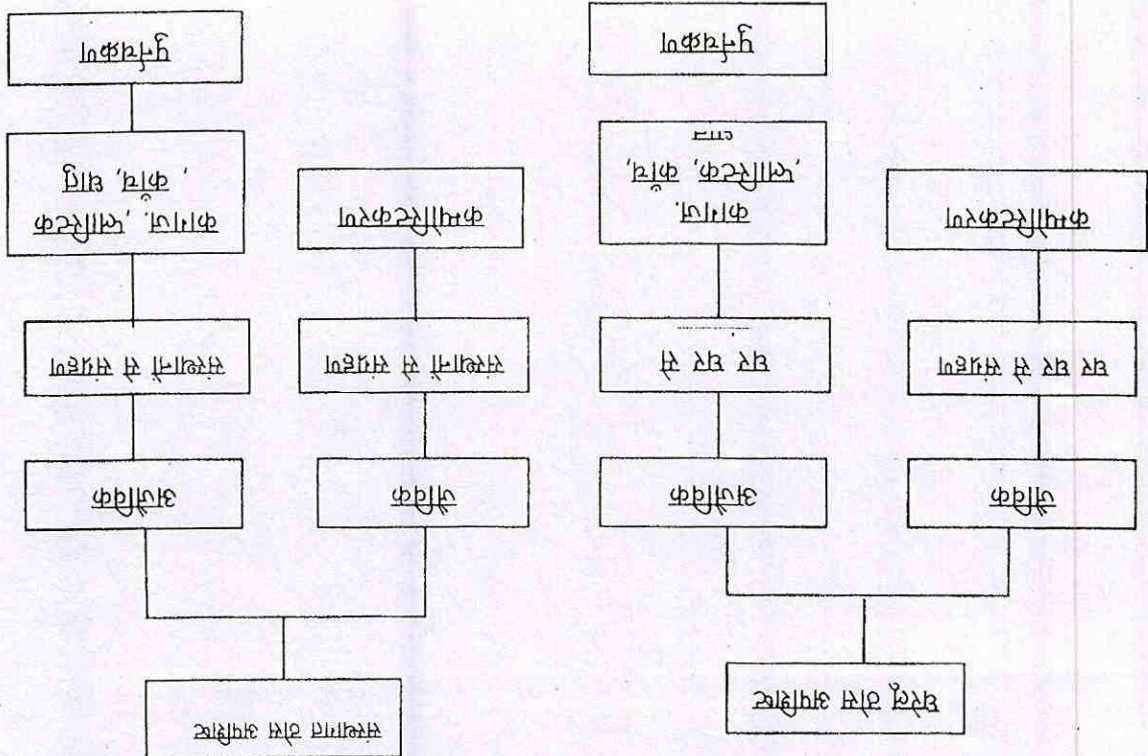
## 7.2 राज्य स्तर पर मोसाहन और निर्वहन:-

को संपूर्ण स्वच्छता को बनाया रखा जाए।  
ग्राम पंचायतों के वार्ड के माध्यम से समुदाय की भागीदारी को सुनिश्चित करना, जिससे क्षेत्र अपशिष्ट एकत्रण से लेकर उसके निस्तारण तक जन सहभागिता सुनिश्चित किया जा सके। पट्टेबाधा जाएगा। ग्राम पंचायतों को क्षेत्र विशेष के अनुक्रम विविध प्रशिक्षण दिया जाएगा ताकि स्कूलों, उच्च शिक्षा संस्थानों, सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से समुदाय तक ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन एक समुदाय आधारित कार्यक्रम है इसके लिए शिक्षा सामग्री को

## 7.1.जानकारीप्रद शिक्षा सामग्री:-

## सामुदायिक जागरूकता और जन शिक्षा कार्यक्रम

W



3

1 = हयूमन एनाटॉमिकल वेस्ट, 2 = एनिमल वेस्ट, 3 = माइक्रोबायोलॉजी एण्ड बायोलॉजी वेस्ट, 4 = डिस्काइज्ड मैडरिन एण्ड सायटोविक्सक ड्रग्स, 5 = सीइन्ड टैक्नोलॉजी वेस्ट, 6 = कन्टेमिनेटेड वेस्ट (सीसाइक्लेन्), 7 = वेस्ट शार्प, 8 = मैटालिक बॉडी वेस्ट, 9 = ग्लास वेस्ट एवं 10 = कैमिकल वेस्ट

### 8.1 अपशिष्ट की श्रेणियां इस प्रकार हैं:-

कलर कोड	हिबे का प्रकार	अपशिष्ट का प्रकार	उपचार का विकल्प
पीला	लारिटिक बैग	1, 2, 3, 5, 6	इंजीनियरिंग लान्सा पयरोलिसिस गहरी से दबाना
लाल	लारिटिक बैग	8	ऑटोक्लेविंग, माइक्रोवेविंग, या कैमिकल ट्रीटमेंट, पुनर्वक्ण
सफेद	लारिटिक बैग	4	ऑटोक्लेविंग, माइक्रोवेविंग या कैमिकल ट्रीटमेंट, डिस्ट्रक्शन श्रेडिंग
नीला	लारिटिक बैग	9, 10	पुनर्वक्ण द्वारा निस्सारण

मैडिकल कचरे को स्रोत पर अलग किया जाना चाहिए और श्रेणियों के अनुसार एकत्र किया जाना चाहिए और नीचे सारणी के रूप में निपटारा जाना चाहिए :-

### 8.1 अस्पताल, क्लीनिक, रोग विज्ञान केन्द्र नर्सिंग होम से संग्रह

राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (यू.ई.पी.पी.सी.बी) जैव-विकल्पा अपशिष्ट प्रबंधन और हैंडलिंग नियम 2016 के अनुसार जैव विकल्पा कचरे को अनिवार्य रूप से प्रबन्धन करेगा।

### बायोमैडिकल कचरे का प्रबंधन

अधिकारी	पद	गतिविधि	अनुमानित परिणाम
मुख्य सचिव	अध्यक्ष	<ul style="list-style-type: none"> <li>कार्यक्रम की समीक्षा एवं निर्देश जारी करना।</li> <li>कार्यक्रमों का समय-समय पर अनुश्रवण करना।</li> <li>एक समय नीति विकसित करने के लिए विभागों के सहभागिता।</li> <li>वित्त प्रबंधन।</li> <li>शहरी क्षेत्रों के लिए आई.एस. डब्ल्यू.एम पर राज्य नीति को अपनाना।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>आई.एस.डब्ल्यू.एम कार्यक्रम में लचीलापन और अनुकूलनशीलता।</li> <li>कचरे की समस्या का एकीकृत समाधान।</li> <li>गामीय इलाकों में आई.एस.डब्ल्यू.एम. कार्यक्रम को उनके अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत कार्यान्वयन सुनिश्चित करना।</li> <li>सरकार की स्वच्छ भारत अभियान की नीति लक्ष्य को प्राप्त करने में आई.एस.डब्ल्यू.एम. को भाग देने और समर्थन करना, भारत की पर्यटक आबादी के बीच जागरूकता निर्माण गतिविधियाँ।</li> <li>योजनाओं के निष्पादन में वित्तीय व्यवस्था को नियोजित करना।</li> <li>वनों के लिए वन संरक्षण कार्यान्वित करना और</li> </ul>
मुख्य सचिव/सचिव	सदस्य		
पर्यटन			
मुख्य सचिव/सचिव, सदस्य	सदस्य		
शहरी विकास			
मुख्य सचिव/सचिव	सदस्य		
वित्त			
मुख्य सचिव/सचिव	सदस्य		
पंचायतीराज			
मुख्य सचिव/सचिव/सदस्य	सचिव		

### 9.1. राज्य स्तर पर कार्यकारिणी समिति :

संस्थानत ढांचा, शहरी औपचारिक संगठनात्मक संरचनाओं, नियमों और सेवा प्रावधान के लिए अनौपचारिक मानदण्डों के एक संग्रह को प्रदर्शित करता है। इस तरह के ढांचा रोस अपशिष्ट प्रबंधन हस्तक्षेप के सकल कियावन्धन की पूर्व अर्हता है।

### संस्थानत ढांचा



अधिकारी	पद	गतिविधि	अनुमानित परिणाम
जिला अधिकारी	अध्यक्ष	● समन्वय एवं जारी निर्देशों का परिपालन सुनिश्चित करवाना व	● जिला स्तर पर आर्इएस. डेवेलपमेंट कायकम के अन्तर्गत विकास क्षेत्र के अन्तर्गत पेशी
मुख्य विकास अधिकारी	सदस्य	● समय-समय पर कायकम की समीक्षा कर आगवश्यक निर्देश जारी करना।	● स्वच्छ जंगलों को सुनिश्चित करना कायान्वयन को सुनिश्चित करना
जिला पंचायत राज अधिकारी	सदस्य / सचिव	● जिला पंचायत प्रशासित क्षेत्रों के लिए आर्इएस. डेवेलपमेंट पर नीति के अपनाना	● भारत सरकार की स्वच्छ भारत अभियान की नीति लक्ष्य को प्राप्त करने में आर्इएस. डेवेलपमेंट को भाग लेने और सम्मेलन करना।
मुख्य शिक्षा अधिकारी	सदस्य	● जिला पंचायत प्रशासित क्षेत्रों के लिए आर्इएस. डेवेलपमेंट पर नीति के	● जीएमपीएन और कंप्यूटरीन में आर्इएस. डेवेलपमेंट कायकम के
अपर मुख्य अधिकारी	सदस्य	● जिला पंचायत प्रशासित क्षेत्रों के लिए आर्इएस. डेवेलपमेंट पर नीति के	● जिला स्तर पर आर्इएस. डेवेलपमेंट कायकम के
खण्ड विकास अधिकारी	सदस्य	● जिला पंचायत प्रशासित क्षेत्रों के लिए आर्इएस. डेवेलपमेंट पर नीति के	● जिला स्तर पर आर्इएस. डेवेलपमेंट कायकम के
मुख्य नगर अधिकारी	सदस्य	● जिला पंचायत प्रशासित क्षेत्रों के लिए आर्इएस. डेवेलपमेंट पर नीति के	● जिला स्तर पर आर्इएस. डेवेलपमेंट कायकम के

### 9.3. जिला स्तर पर निगरानी और कार्यान्वयन समिति :

विशेषज्ञ	सदस्य	● लोककला पर नियमित रूप से टोस अपोस्टि प्रबन्धन नियमों से विज्ञ करना	● स्वच्छ भारत अभियान का अनुपालन सुनिश्चित करना
एस. डेवेलपमेंट		● जिला स्तर पर आर्इएस. डेवेलपमेंट कायकम के अन्तर्गत पेशी	● जिला स्तर पर आर्इएस. डेवेलपमेंट कायकम के अन्तर्गत पेशी

3

<ul style="list-style-type: none"> <li>• अपने कार्यालय में दोस अपशिष्ट प्रबन्धन को सुनिश्चित करना</li> <li>• अपने कार्यालय में दोस अपशिष्ट परिचालन सुनिश्चित करना।</li> <li>• अवशिष्टों से पैदाउ उत्पादों का निष्पन्न कर लेना।</li> </ul> <p>उत्पाद प्रबन्धन के लिए आवश्यक कर्मियों की योजना बनाने समय संरचनात्मक परिवर्तन शामिल करना।</p>			<p>आवक प्रमुख / अधिकारी अधिकारी</p> <p>स्थानीय निकाय</p> <p>कार्य प्रमुख</p> <p>सदस्य</p>
--	--	--	---

संबंधित जिले के जिलाधिकारी/जिलाधिकारी द्वारा नामित अधिकारी यह सुनिश्चित करेंगे कि ग्राम पंचायतों द्वारा तैयार अपशिष्ट के प्रभावी प्रबंधन के लिए वांछित उपकरणों का कय उत्तराखण्ड राज्य खरीद नियमों के अनुपालन में ही हो।

#### 9.4.2 ग्राम पंचायत स्तर पर मशीनरी/उपकरणों की खरीद :

संबंधित जिले के जिलाधिकारी की जिम्मेदारी इन नियमों एवं प्रावधानों को लागू करवाने की होगी, जो उनके क्षेत्राधिकार क्षेत्रीय सीमाओं के भीतर हैं। जिलाधिकारी/जिलाधिकारी द्वारा नामित अधिकारी द्वारा ग्राम पंचायत के अंदर तैयार अपशिष्ट के प्रसंस्करण हेतु भूमि का वयन सुनिश्चित किया जायेगा।

#### 9.4.1. पंचायत स्तर पर भूमिका और उत्तरदायित्व :

अधिकारी	पद	गतिविधि	अनुमानित परिणाम
अध्यक्ष, जिला पंचायत	अध्यक्ष	कार्यक्रमों की समीक्षा करना	● जिला स्तर पर तैयार अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए
मुख्य विकास अधिकारी	सदस्य / सचिव	गतिविधियाँ	● गतिविधियों का निरीक्षण करना
जिला पंचायत	जिला पंचायत	कार्यक्रमों की समीक्षा करना	● जिला स्तर पर तैयार अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए
अपर मुख्य अधिकारी	सदस्य	कार्यक्रमों की समीक्षा करना	● जिला स्तर पर तैयार अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए
जिला पंचायत	जिला पंचायत	कार्यक्रमों की समीक्षा करना	● जिला स्तर पर तैयार अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए
मुख्य क्षेत्र पंचायत	सदस्य	कार्यक्रमों की समीक्षा करना	● जिला स्तर पर तैयार अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए
मुख्य कृषि अधिकारी	सदस्य	कार्यक्रमों की समीक्षा करना	● जिला स्तर पर तैयार अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए
जिला उद्यान अधिकारी	सदस्य	कार्यक्रमों की समीक्षा करना	● जिला स्तर पर तैयार अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए
प्रभागीय वनाधिकारी	सदस्य	कार्यक्रमों की समीक्षा करना	● जिला स्तर पर तैयार अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए
नौटल अधिकारी स्वच्छ	सदस्य	कार्यक्रमों की समीक्षा करना	● जिला स्तर पर तैयार अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए
भारत मिशन ग्रामीण	सदस्य	कार्यक्रमों की समीक्षा करना	● जिला स्तर पर तैयार अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए
अधीक्षण अभियन्ता	सदस्य	कार्यक्रमों की समीक्षा करना	● जिला स्तर पर तैयार अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए
लॉनिंग अभियन्ता	सदस्य	कार्यक्रमों की समीक्षा करना	● जिला स्तर पर तैयार अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए
अधीक्षा अभियन्ता	सदस्य	कार्यक्रमों की समीक्षा करना	● जिला स्तर पर तैयार अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए
जिला पर्यटन अधिकारी	सदस्य	कार्यक्रमों की समीक्षा करना	● जिला स्तर पर तैयार अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए
प्रत्येक ब्लॉक से 2	सदस्य	कार्यक्रमों की समीक्षा करना	● जिला स्तर पर तैयार अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए
नामित ग्राम प्रधान	सदस्य	कार्यक्रमों की समीक्षा करना	● जिला स्तर पर तैयार अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए

#### 9.4. जिला स्तर पर सलाहकार एवं अनुश्रवण समिति :

- अथर्व, ग्राम पंचायत द्वारा अध्यक्षता
- ग्राम पंचायत विकास अधिकारी - सचिव
- निर्वाचित सदस्य
- एसडब्ल्यूएम में काम कर रहे प्रमुख और सरकारी संगठन
- वरिष्ठ नागरिक (सेवानिवृत्त)
- हितधारक - सामाजिक संस्थाएँ, धार्मिक प्रमुख, स्कूल, व्यापारी, संस्थान, होटल, आश्रम, पत्रकार, आशा कार्यकर्त्री, ए.एन.एम. आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री, प्रत्येक एक सदस्य

9.5 समूह कार्य के माध्यम से ग्राम पंचायत स्तर पर ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन के क्रियान्वयन हेतु समिति का गठन



देना।	आंतरिक और बाह्य हितधारकों के लिए नागरिक चार्टर के विकास और	होम अपशिष्ट प्रबंधन	कौशल और	कार्यबल कायान्वयन	कार्यबल और	विकास और	विकास	मानव संसाधन विकास	अपशिष्ट न्यूनीकरण साझेदारी योजना का विकास	अपशिष्ट न्यूनीकरण	संयोजित योजना
	सभी हितधारकों की भागीदारी जिसमें स्कूल, होटल, लॉज, आश्रम और समुदाय आधारित संगठन शामिल हैं।	उपभोक्ता अपशिष्ट और इसके निपटन के बाद अवैधिक व खाद का पुनर्विक्रय	कचरे के खाद और पुनर्विक्रय का संर्जन जिससे अपशिष्ट हैंडलिंग की क्षमता को बढ़ाना।	अपशिष्ट संग्रह और निपटन के लिए नई तकनीक के फिस्टलीकरण के लिए आवश्यक खर्च	अपशिष्ट को कम करने और निपटन के लिए मूँस की आवश्यकता के लिए एक समग्र योजना।	ऐसे क्षेत्रों को देखने के लिए जहाँ अपशिष्ट उत्पादन के आस पास अपशिष्ट का उपचार किया जा सके जैसे -होटल, सरकारी उपनिवेश के अन्दर मूँस आदि।	अपशिष्ट न्यूनीकरण में घरों के आस पास में खाद बनाने के लिए अपशिष्ट न्यूनीकरण	अपशिष्ट न्यूनीकरण	अपशिष्ट न्यूनीकरण	अपशिष्ट न्यूनीकरण	अपशिष्ट न्यूनीकरण

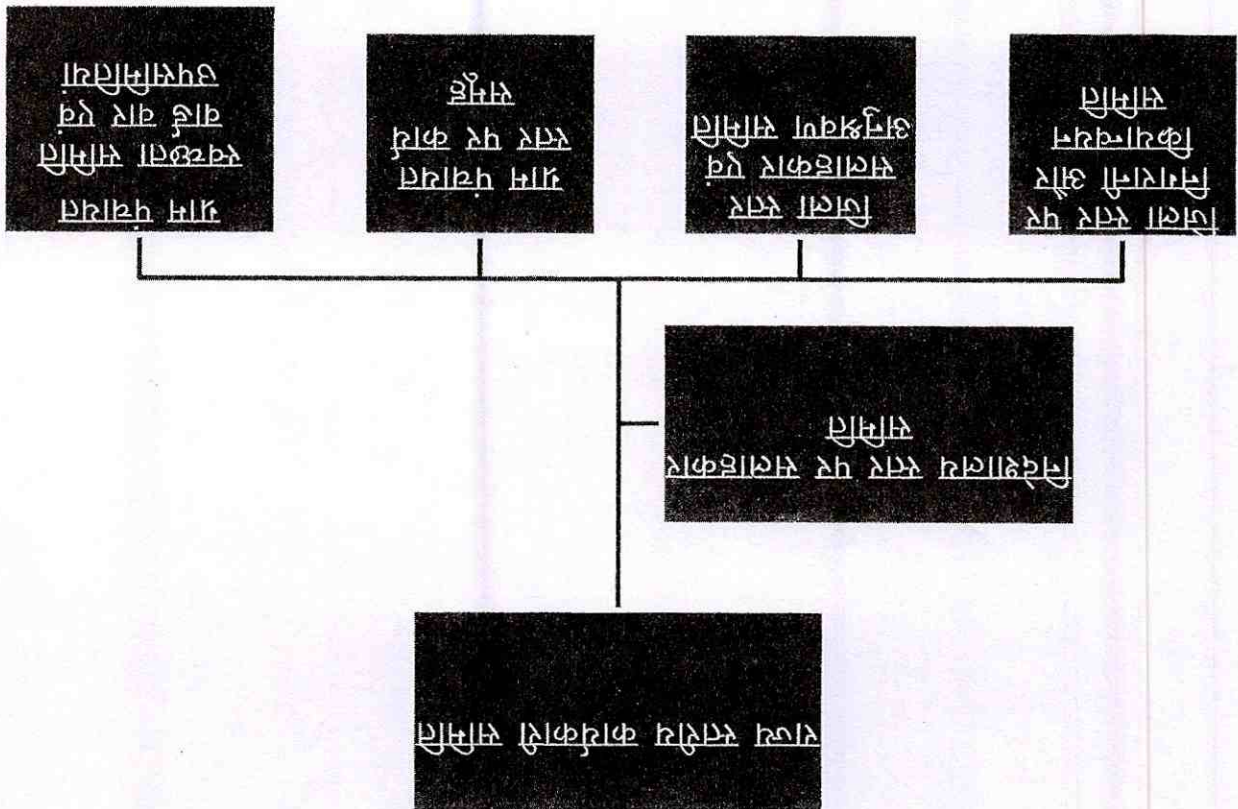
<p>कार्यक्रम संवालाओं का एक और प्रशिक्षण और कार्यक्रमों के उपयोगकर्ता और प्रशिक्षण और निपटान के विशेष प्राधान्य।</p>	<p>घटनाओं के दौरान कार्यकर्ता, प्रशिक्षण और एक कार्यक्रम संवालाओं का उपयोगकर्ता और प्रशिक्षण और निपटान के विशेष प्राधान्य।</p>		<p>सार्वजनिक कार्यक्रमों में जागरूकता और शिक्षा के विकास और</p>	<p>अपशिष्ट शिक्षा, जागरूकता और प्रशिक्षण</p>
<p>के लिए कार्यक्रम में अपशिष्ट का संग्रहण के क्षम / रात के समय में</p>	<p>के लिए कार्यक्रम में अपशिष्ट का संग्रहण क्षम / रात के समय में</p>	<p>संख्या</p>	<p>दुकानों, व्यापार केंद्रों, संख्या</p>	
<p>बताना निपटान का महत्व</p>	<p>बढ़ावा देना। उपयोग के निपटान को प्रभावकारण और से स्रोत प्रभावकारण और को प्रशिक्षण के माध्यम एक कार्यवाही आधारित होटल, लॉज मालिकों</p>	<p>संख्या</p>	<p>होटल, कर्मियों, आश्रमों लॉज आदि के लिए जागरूकता और शिक्षा योजना के विकास और</p>	
<p>परिसर के अंदर अपशिष्ट प्रबंधन और प्रबंधन के लिए बच्चों को प्रशिक्षण</p>	<p>परिष्कार में परिष्कार प्रबंधन के लिए एक पाठ्यक्रम आधारित कार्यक्रम के लिए बच्चों को प्रशिक्षण</p>	<p>संख्या</p>	<p>स्कूलों के अपशिष्ट विकास और</p>	
<p>कार्यक्रम।</p>	<p>कार्यक्रम।</p>			

	<p>अपशिष्ट संग्रहण का कार्यक्रम</p>	<p>अपशिष्ट संग्रहण के लिए एक रणनीति तैयार करनी चाहिए।</p>	<p>अपशिष्ट संग्रहण के लिए एक रणनीति तैयार करनी चाहिए।</p>
<p>अपशिष्ट संग्रहण</p>	<p>संग्रहण कार्य का कि.मा. अनुकूलन</p>	<p>प्रतिशत</p>	<p>अपशिष्ट एकत्रीकरण प्रति कर्मचारी प्रति दिन प्रत्येक माह में एकत्रित अपशिष्ट की कुल मात्रा</p>
	<p>प्रबंधन प्रणाली</p>	<p>प्रतिशत</p>	<p>अपशिष्ट प्रसंस्करण से अवयव कम्पॉस्टिंग और पुनर्विक्रय के माध्यम से विकास और कार्यान्वयन।</p>
<p>अपशिष्ट प्रसंस्करण और निपटान</p>	<p>निपटान सुविधाएँ</p>		<p>एम.एस.डब्ल्यू नियम 2000 और जी.ओ. No.113/07/XII/ 90(11)2006 दिनांक अप्रैल 2, 2007 का नियमांक अनुपालन</p>
	<p>अपशिष्ट संग्रहण के स्थान और सामग्री की प्राप्ति से सम्बन्धित सुविधाएँ</p>		<p>नीति के आधार पर स्थानांतरण स्थानों के विकास को लागू करना।</p>



3

के विकास के लिए गांवों में कलस्टर आधारित प्रतिक्रिया			की अग्रणी 1 के अनुक्रम	
---	--	--	---------------------------	--



रक्षक अपशिष्ट प्रबंधन संस्थान स्थापित करने के लिए संगठनात्मक चार्ट



### खण्डवार ज्ञापन

प्रस्तावित नीति ग्राम पंचायतों के लिए रीस अपशिष्ट प्रबन्धन की व्यवस्था को उपबोधित करने के लिए अधिनियमित किया जा रहा है।

प्रस्तावित नीति पर खण्डवार ज्ञापन निम्नवत है।

खण्ड - 1 नीति की प्रस्तावना के सम्बन्ध में उपबोधित किया जाना प्रस्तावित है।  
खण्ड - 2 पंचायतों के लिए उत्तराखण्ड रीस अपशिष्ट प्रबन्धन नीति के सम्बन्ध में उपबोधित किया जाना प्रस्तावित है।

खण्ड - 3 (क) निम्नोक्त संस्थाएं—ग्राम पंचायतों के सम्बन्ध में उपबोधित किया जाना प्रस्तावित है।

खण्ड - 4 शासकीय सिद्धांत के सम्बन्ध में उपबोधित किया जाना प्रस्तावित है।

खण्ड - 5 अभिनव तकनीकों के सम्बन्ध में उपबोधित किया जाना प्रस्तावित है।

खण्ड - 6 प्रसरकण दिशानिर्देश के सम्बन्ध में उपबोधित किया जाना प्रस्तावित है।

खण्ड - 7 सामुदायिक जागरूकता एवं जन शिक्षा कार्यक्रम के सम्बन्ध में उपबोधित किया जाना प्रस्तावित है।

है।

खण्ड - 8 बायोमैडिकल कचरे का प्रबन्धन के सम्बन्ध में उपबोधित किया जाना प्रस्तावित है।

खण्ड - 9 संस्थागत ढांचा के सम्बन्ध में उपबोधित किया जाना प्रस्तावित है।

खण्ड - 10 मुख्य प्रदर्शन संकेतक के सम्बन्ध में उपबोधित किया जाना प्रस्तावित है।

खण्ड - 11 रीस अपशिष्ट प्रबन्धन संस्थान स्थापित करने के लिए संगठनात्मक चार्ट के सम्बन्ध में उपबोधित किया जाना प्रस्तावित है।

खण्ड - 12 उत्प्रेषण और दण्ड के सम्बन्ध में उपबोधित किया जाना प्रस्तावित है।

(मनीषा पवार)  
प्रमुख सचिव, पंचायतीराज  
उत्तराखण्ड शासन।